Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 2, Feb – 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 30/01/2021 Accepted on : 14/02/2021 Publication Date: 15/02/2021

कैफ़ी आज़मी: व्यक्तित्व और सामाजिक प्रतिबद्धता

विजयता दुबे

एम. फिल., कलकत्ता विश्वविद्यालय
Email - vijayatadubey1@gmail.com

बदलने लगा है अमल का क़रीना
लहू में है खौलना जबीं पर पसीना
धड़कती हैं निब्जें सुलगता है सीना
गरज ऐ बगावत, कि तैयार हूँ मैं
बड़ा दुख है मुजको कि बेकार हूँ मैं

- **कैफ़ी आज़मी**

उर्दू के मशहूर शायर कैफ़ी आज़मी का जन्म १९ जनवरी,१९१८ को उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ के पास एक छोटे से गाँव मिजवॉ में हुआ था| उनका असली नाम अतहर हुसैन रिजवी था| कैफ़ी आज़मी एक प्रतिष्ठित जमींदार परिवार सैयद फतह हुसैन रिज्वी और कनिज फातमा के चौथे बेटे के रूप में पैदा हुए| कैफ़ी आज़मी के घर का माहौल बहुत अच्छा था| शायरी का हुनर खानदानी था| उनके तीनों बड़े भाई शायर थे| आठ वर्ष की उम्र से कैफ़ी आज़मी ने लिखना शुरू कर दिया था|

"इतना तो ज़िंदगी में किसी की ख़लल पड़े
हँसने से हो सुकूँ न रोने से कल पड़े
जिस तरह हँस रहा हूं मैं पी-पी के गर्म अश्क
यूँ दूसरा हँसे तो कलेजा निकल पड़े"[1]

कैफ़ी आज़मी लिखते हैं- **"यह मेरी ज़िंदगी की पहली गजल है, जो मैंने ग्यारह वर्ष की उम्र मे कही थी|"**[2] ग्यारह वर्ष की उम्र में पहली बार कैफ़ी आज़मी ने बहराइच के एक मुशायरे में यह गज़ल पढ़ी| उस मुशायरे की अध्यक्षता 'मानी जायसी' साहब कर रहे थे| मानी जायसी को कैफ़ी की गज़ल बहुत पसंद आई| लेकिन उनकी उम्र को देखते हुये किसी को यकीन नही हुआ कि वह गज़ल खुद कैफ़ी ने लिखी है| कैफ़ी आज़मी को इम्तिहान से गुजरना पड़ा जिसमें वे सफल रहे|

कैफ़ी आज़मी की पहली गज़ल बेगम अख्तर तक पहुँच गई और उसे उन्होंने अपनी आवाज देकर सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तान में मशहूर कर दिया| कैफ़ी की चार बहनों कि असामयिक मौत ने कैफ़ी आज़मी के दिलो-दिमाग पर बुरा प्रभाव डाला| कैफ़ी की चार बहनों की असामयिक मौत से कैफ़ी के पिता को यह आशंका हुई कि लड़कों को आधुनिक तालीम देने के कारण ही उनके घर पर यह मुसीबत आ पड़ी है| परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये उनके माता-पिता ने कैफ़ी को दीनी तालीम दिलाने का फैसला कर लिया| कैफ़ी आज़मी लिखते हैं- **"वह यह सोचने लगे और कहने लगे कि हमने सब लड़कों को अंग्रेजी पढ़ाई है इसलिए घर पर यह कोप आया| वह अम्मा से अक्सर कहते कि जब हम मरेंगे तो कोई फ़ातिहा भी नही पढ़ेगा, अंग्रेजी स्कूलों में उनको फ़ातिहा पढ़ना सिखाया ही नही गया है| इसलिए माता-पिता ने स्वयं यह निर्णय लिया कि मुझे दीनी शिक्षा दिलाई जाए|"**[3] इसी बात को एक प्रगतिशील लेखिका आयसा सिद्दकी ने इस प्रकार लिखा है- **"कैफ़ी साहब को उनके बुजुर्गों ने एक दीनी शिक्षागृह में इसलिए दाखिल किया था कि वहां यह फ़ातिहा पढ़ना सीख जाएंगे| कैफ़ी साहब इस शिक्षागृह में मज़हब पर फ़ातिहा पढ़कर निकल आए|"**[4] कैफ़ी आज़मी के पिता ने लखनऊ में शियों के सबसे बड़े शिक्षा गृह 'सुल्तानुल मदारिस' में कैफ़ी का नाम लिखा दिया और बोर्डिंग में दाखिल करा दिया| 'सुल्तानुल मदारिस' में पढ़ते हुये कैफ़ी आज़मी ने १९३३ में प्रकाशित और ब्रिटिश हुकूमत द्वारा जब्त कहानी संग्रह 'अंगारे' पढ़ लिया था| कैफ़ी आज़मी बताते हैं कि प्रगतिशील साहित्य

[1] आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन-परिचय, प्रथम संस्करण- जनवरी २००२, पृ॰सं॰-२६
[2] वही
[3] वही, पृ॰सं॰-१८
[4] वही,

से यह उनका पहला परिचय था| उनही दिनों मदरसे की अव्यवस्था को लेकर कैफ़ी ने क्षात्रों की यूनियन बनाकर अपनी मांगों के साथ हड़ताल शुरू कर दी| कैफ़ी लिखते हैं– **"मैंने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर क्षात्रों की एक कमेटी बनाई और क्षात्रों की कुछ मांगें बनाईं गई और उनको लेकर 'सुल्तानुल मदारिस' की व्यवस्था समिति को पेश किया|"**[5] डेढ़ वर्ष तक 'सुल्तानुल मदारिस' बंद कर दिया गया, परंतु गेट पर ही हड़ताल व धरना चलता रहा| ऐसी कठिन परिस्थितियों में कैफ़ी आज़मी ने विरोध की शायरी लिखना आरंभ कर दिया| वे कहते हैं– **"शायरी की शुरुआत एक परंपरागत गज़ल से हुई थी, लेकिन इस स्ट्राइक के दौरान गज़लगोई छूट गई और मैं विरोध की शायरी करने लगा| करीब–करीब रोज़ एक नज़्म कर लेता| लड़कों को सुनाता और उनमे जोश पैदा करता|"**[6]

धरनास्थल से गुजरते हुए अली अब्बास हुसैन, उर्दू वालों में प्रेमचंद के बाद दूसरा नाम, कैफ़ी आज़मी प्रतिभा को पहचानकर कैफ़ी और उनके साथियों को अपने घर पर आने की दावत दी| वहीं पर कैफ़ी की मुलाक़ात एहतिशाम साहब से हुई जो उन दिनों 'सरफराज' के सम्पादक थे| एहतिशाम साहब ने कैफ़ी की मुलाकात अली सरदार जाफरी से कराई| जाफरी साहब स्टूडेंट्स फेडरेशन के जनरल सेक्रेट्री या सदर थे| कैफ़ी आज़मी लिखते हैं– **"आज़म साहब ने हमारे समर्थन में ज़बरदस्त संपादकीय लिखा| ज़ाफरी साहब हमारी मीटिंगों में आने लगे| हमारे एजीटेशन में जान आ गई| हुसैनबाद वक्फ़ के मुतवल्लियों ने हमारी माँगें मान ली और लगभग डेढ़ साल बाद हमारी स्ट्राइक खत्म हुई| लेकिन चंद और साथी 'सुल्तानुल मदारिस' से निकाल दिए गए|"**[7]

सन १९३२–१९४२ तक लखनऊ में रहने के बाद कैफ़ी साहब कानपुर चले गये और वह मजदूर सभा में काम करने लगे| मज़दूर सभा में काम करते हुए कैफ़ी ने कम्युनिस्ट साहित्य का गंभीरता से अध्ययन किया| १९४३ में जब बम्बई में कम्युनिस्ट पार्टी का ऑफिस खुला तो कैफ़ी बम्बई चले गये और वहीं काम करने लगे| 'सुल्तानुल मदारिस' से निकाले जाने के बाद कैफ़ी मौलवी बनने का ख्याल छोड़ चुके थे, लेकिन उन्होंने पढ़ाई जारी रखी और प्राइवेट परीक्षा देकर (१) दबीर माहिर (फ़ारसी), (२) दबीर कामिल (फ़ारसी), (३) आलिम (अरबी), (४) आला काबिल (उर्दू), (५) मुंशी (फ़ारसी), (६) मुंशी कामिल (फ़ारसी) की डिग्री हासिल किया|

हैदराबाद में एक मुशायरे में कैफ़ी आज़मी अपने अनोखे अंदाज में अपनी मशहूर नज़्म 'औरत' सुना रहे थे–

"उठ मेरी जान! मेरे साथ ही चलना है तुझे
क़द्र अब तक तेरी तारीख ने जानी ही नहीं
तुझमें शोले भी हैं बस अश्कफिशानी ही नहीं
तू हक़ीक़त भी है दिलचस्प कहानी ही नहीं
तेरी हस्ती भी है इक चीज़ जवानी ही नहीं
अपनी तारीख का उनवान बदलना है तुझे
उठ मेरी जान! मेरे साथ ही चलना है तुझे"[8]

उनकी इस कलात्मक प्रस्तुति ने शौकत को अपनी मंगनी तोड़ने के लिए बाध्य कर दिया था| कैफ़ी आज़मी की वह नज़्म खत्म होने भर में ही शौकत ने अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा फैसला ले लिया था| उस मुशायरे के बारे में शौकत आज़मी कहती हैं– **"मुशायरा खत्म हुआ तो लोगों की भीड़ कैफ़ी, अली सरदार जाफरी और मजरूह सुल्तानपुरी की तरफ़ ऑटोग्राफ बुक लेकर लपकी|"**[9] शौकत आज़मी आगे बताती हैं– **"कैफ़ी पर कॉलेज की लड़कियाँ मधुमक्खियों की तरह झुकी जा रही थीं| मैंने कैफ़ी पर उड़ती हुई नज़र डाली और सरदार जाफरी की तरफ़ मुड़ गई| जब भीड़–भाड़ कम हो गई तो मैंने बहुत अदा से अपनी ऑटोग्राफ बुक कैफ़ी की तरफ़ बढ़ा दी| उन्होंने उस पर बहुत ही मामूली–सा शेर लिख दिया| बाद में जब मुझे मौका मिला तो मैंने उनसे पूछा कि आपने इतना खराब शेर मेरी किताब पर क्यों लिखा?"**[10] शौकत बताती हैं– **"कैफ़ी मुस्कुरा कर बोले–**

[5] वही, पृ॰सं॰–२१
[6] आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–२२
[7] वही, पृ॰सं॰–२३
[8] आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–६४
[9] www-bbc-com.cdn.ampproject.org
[10] वही

आपने पहले जाफरी साहब से ऑटोग्राफ क्यों लिया? मैं खिलखिला कर हस दी और यहीं से हमारे इश्क़ की शुरुआत हुई|"[11] शौकत ने अपने पिता से कहा कि वो कैफ़ी से ही शादी करेंगी|

शौकत के माता–पिता, सहेलियों ने उन्हें बहुत समझाया और इस रिश्ते की ऊँच–नीच के बारे में भी बताया| उन्होंने कहा कि वह शायर है, शादी के लिए सिर्फ़ शायरी काफ़ी नहीं होती, वह बेघर है, कम्युनिस्ट पार्टी उसे केवल ४० रुपये महीना देती है| खाने–पीने और कपड़ों की जरूरतें कैसे पूरी होंगी? इत्यादि| लेकिन शौकत अब पीछे हटने को तैयार नहीं थी| उन्होंने अपने पिता को समझाया| शौकत बताती हैं कि– **"मेरे पिता बहुत समझदार और तरक्की पसंद आदमी थे| उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुम्हें बम्बई लेकर जाऊंगा| वहां तुम देखना कि कैफ़ी किस तरह की जिन्दगी जी रहे हैं| तब तुम आखीरी फैसला करना|. . . .कैफ़ी मिट्टी भी उठायेंगे और मज़दूरी भी कर रहे होंगे, तो भी मैं उनके साथ मज़दूरी करूँगी और शादी उन्हीं से करूँगी|"**[12] सज्जाद ज़हीर के घर में कहानीकार इस्मत चुगताई, फिल्म निर्देशक शादिद लतीफ़, शायर अली सरदार ज़ाफरी, अंग्रेजी के लेखक मुल्कराज आनंद की मौजूदगी में वह प्रेम का रिश्ता शादी में बादल गया

शबाना आज़मी और बाबा आज़मी के पैदा होने के बाद घर चलाने के लिए शौकत आज़मी ने ऑल इंडिया रेडियो में काम किया, उसके बाद उन्होंने पृथ्वी थियेटर में काम किया| शौकत पूरी लगन और मेहनत से अपने काम को अंजाम देती गयीं| कभी–कभी तो वो अपने रोल में खो जाती थीं, शबाना लिखती हैं– **"मुझे याद है, महाराष्ट्र स्टेट प्रतियोगिता के लिए वो एक ड्रामा 'पगली' की तैयारी कर रही थीं और अपने रोल में इतना खोई रहती थीं कि वो डायलॉग 'पगली' के अंदाज में बोलने लगती थीं, कभी धोबी से हिसाब लेते हुए, कभी रसोई में खाना पकाते हुए| मुझे लगा, मेरी माँ सचमुच पागल हो गई हैं|"**[13]

कैफ़ी आज़मी का व्यक्तित्व और उनका रहन–सहन बहुत ही सीधा और सरल था| उनमें दिखावे की प्रवृत्ति बिल्कुल भी नहीं थी| कैफ़ी आज़मी शायर होने के साथ–साथ एक अच्छे 'स्टेज परफ़ार्मर' भी थे| शायरी और इसकी अदायगी दोनों चीज़े एक ही शायर में होना बहुत मुश्किल लगता है, लेकिन जिनमें ये बात होती है वो अपने जीवनकाल में ही प्रसिद्धि हासिल कर लेते हैं| निदा फ़ाजली का कहना है कि कैफ़ी के पढ़ने का अंदाज अपने समकालीनों में सबसे अनोखा थ| मैंने हिन्दी के सुमन और भवानी भाई को भी सुना है और उर्दू के फ़िराक और जोश को भी| निदा फ़ाजली कहते हैं– **"उस जमाने में हिन्दी में सबसे प्रभावशाली कविता–पाठ शिवमंगल सिंह सुमन का हुआ करता था| उनमें श्रोताओं को बाँध लेने की गज़ब की क्षमता थी| लेकिन उर्दू में उनकी टक्कर का सिर्फ़ एक ही शायर था और उसका नाम था कैफ़ी आज़मी|"**[14]

परंपरा के अनुसार कैफ़ी आज़मी शुरू में अपने कलाम गाकर सुनाया करते थे लेकिन सरोजिनी नायडू से मुलाकात के बाद उन्होंने अपना शेर गाकर सुनना बंद कर दिया| निदा फ़ाजली कहते हैं– **"वो दिन था, उसके बाद से कैफ़ी और अलीसरदार ज़ाफरी ने हमेशा अपने शेरों को पढ़ा है, गाया नहीं और उसी के बल पर अपने चाहने वालों के दिलों मे जगह बनाई है|"**[15] कैफ़ी आज़मी निदा फ़ाजली के समकालीन थे| उसी तरह जैसे उम्र के फर्क के बावजूद वो अपने सीनियर शायर जोश मलीहाबादी,रघुपति सहाय,फ़िराख और जिगर मुरादाबादी के समकालीन थे| वह इन बुजुर्गों के ज़माने के नौजवान शायर थे| सन् ३५–३६ में सज्जाद जहीर और मुल्कराज आनंद की कोशिशों से भारत में प्रगतिशील अदबी आंदोलन की शुरुआत हुई थी और उस आंदोलन में शायरों की नयी पीढ़ी उभर के सामने आई थी| प्रेमचंद ने साहित्य जगत में सौंदर्य की कसौटी को बदल दिया था| यही बदलाव हम कैफ़ी आज़मी में भी देखते हैं| कैफ़ी ने अपने बच्चों को गंगा–जमुना तहजीब सिखाई| उन्हें होली, दिवाली, क्रिसमस सब मनाना सिखाया| कैफ़ी ने जीवन का बड़ा सच सिखाया| वो सच था– **'ब्लैक इस व्यूटीफुल टू'**| ये सच शबाना ने उस दिन सीखा था जब उनके पिता उनके लिए एक काली गुड़िया लाए थे| शबाना छोटी थी उन्हें नीली आँखों और भूरे बाल वाली गुड़िया चाहिए थी| लेकिन कैफ़ी ने उन्हें समझाया कि 'ब्लैक इस व्यूटीफुल टू'| शबाना लिखती हैं– **"जब मैं अपनी काली गुड़िया लेकर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी दोस्तों के पास गई और उन्हें अपनी गुड़िया के गुण बताए तो उनकी**

[11] वही
[12] वही
[13] आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–०६
[14] www-bbc-com.cdn.ampproject.org
[15] वही

सुनहरे बालों और नीली आँखों वाली गुड़िया उनके दिल से उतर गई| ये सबसे पहला सबक था जो अब्बा ने मिझे सिखाया, कि कामयाबी दूसरों कि नक्ल में नहीं, आत्मविश्वास में हैं|"[16]

कैफ़ी आज़मी के गीतों ने फिल्मों में अदबी रंग पैदा किया और साहिर की तरह उन गीतों से उन्होंने यश भी पाया और नाम भी कमाया| गीतों के अलावा कैफ़ी आज़मी ने फिल्मों के लिए पटकथाएँ भी लिखीं| इसमें 'गर्म हवा' खास है| उनमें अहम् का भाव कभी नहीं आया कैफ़ी जब मुशायरे से वापस आते थे तो इनकी बीबी और बच्चे उनसे पूछते थे कि आज आपने क्या नज़्म सुनाई? बहुत ज़िद करने पर कैफ़ी कहते– **"छिछ्होरे लोग अपनी तारीफ़ करते हैं, जिस दिन मुशायरे में बुरा पढ़ूँगा, उस दिन आकर बताऊँगा|"[17]**

कैफ़ी आज़मी के नज़्मों और गज़लों से संबंधित कई किताबें हैं– (१) झंकार (२) आवारा सजदे (३) सरमाया (४) कैफ़ियत (५) दूसरा बनवास (६) चुनी हुई शायरी (७) पवन वर्मा ने चुनिंदा कलाम का अंग्रेजी में तर्जुमा किया (८) उर्दू ब्लिट्ज़ में लिखे गए कॉलम की दो किताबें (९) मेरी आवाज़ सुनो (१०) वाणी प्रकाशन से देवनागरी में शाया की फ़िल्म हीर–रांझा की स्क्रिप्ट (११) नज़्में,गज़लें और गीत (राजपाल एंड संस) | कैफ़ी आज़मी को अनेक सम्मानों से नवाज़ा गया है– पद्मश्री, साहित्य अकादमी फेलोशिप, साहित्य अकादमी अवार्ड, महाराष्ट्र गौरव अवार्ड–महाराष्ट्र सरकार, दिल्ली सरकार राज्य अवार्ड, सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड, अफ्रो एशियन राइटर्स लोटस अवार्ड, यश भारतीय अवार्ड उ॰प्र॰ सरकार, पूर्वाचल विश्वविद्यालय, आगरा यूनिवर्सिटी और शांति निकेतन की विश्वभारती वगैरह से डॉक्टरेट|

कैफ़ी आज़मी ने 'इप्टा' के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दिया| उनका मानना था कि बजाय इसके कि लोग थियेटर में आए हमें थियेटर को लोगों तक ले जाना होगा, सड़कों पर ले जाना होगा, दूर–दराज गावों में ले जाना होगा| उन्होंने 'बालमंच' बनाया, गोरखपुर और आजमगढ़ में 'इप्टा' को पहुंचाया| कैफ़ी आज़मी को ना तो स्वयं की प्रसिद्धि में दिलचस्पी थी और न ही पैसों में| वो तो केवल साधारण जनता के लिए जीना चाहते थे, पीड़ितों, शोषितों के लिए कुछ करना चाहते थे| जो रचनाएं सामाजिक न्याय की बात करती हैं वो रचनाएं दीर्घजीवी हैं तो गलत नहीं होगा|

सामंतवाद, सांप्रदायिकता और अराजक तत्वों के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले मजहब और धर्म के नाम पर लड़ने–झगड़ने वालों को आड़े हाथों लेने वाले, भ्रष्टाचार और गरीबी को जड़ से खत्म करने की इच्छा रखने वाले, मानवीय संवेदनाओं और असहाय लोगों की आवाज़ को जन–जन तक पहुँचाने वाले प्रगतिशील शायर कैफ़ी आज़मी का मानना था कि– **"कला को सामाजिक बदलाव के लिए एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए|"[18]**

कैफ़ी आज़मी ने अपनी रचनाओं में गरीबों, शोषितों, स्त्रियों आदि के हक की बात कही है| सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता के खिलाफ़ और स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन में उन्होंने कई नज़्में व गज़लें लिखीं| इस संदर्भ में उनके मशहूर कलाम हैं– औरत, मकान, दायरा, सांप, बहरूपनी वगैरह| कैफ़ी शुरू से ही अलग विचारधारा के थे| कैफ़ी जब सात साल के थे और ईद का दिन था, उस दिन उन्होंने इसलिए नए कपड़े नहीं पहने क्योंकि किसान के बच्चे कपड़े नहीं पहन सकते थे| कैफ़ी आज़मी ने मदनपुरे में मज़दूरों के साथ काम भी किया था| कैफ़ी ने अपने मशहूर नज़्म 'मकान' में उस शख्स के बारे में लिखा है जो अपने खून–पसीने से शानदार बिल्डिंग तो बना देता है लेकिन जब वो बिल्डिंग बन कर तैयार हो जाती है तो उसके बाहर एक पहरेदार खड़ा कर दिया जाता है और उसी इंसान को अंदर जाने की इजाज़त नहीं होती जिसे उसने अपने हाथों से बनाया है| इस नज़्म में वे लिखते हैं–

"आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है
आज की रात न फुटपाथ पे नींद आएगी
सब उठो, मैं भी उठूँ, तुम भी उठो, तुम भी उठो

[16]आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–०६
[17]आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–०९

[18] hindi-webdunia-com.cdn.ampproject.org

कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जाएगी"[19]

कैफ़ी आज़मी का समाजवादी और लोकतांत्रिक रवैया अक्सर उनकी शायरी में नज़र आता था| १९ साल की उम्र में कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े और मार्क्सवादी विचारधारा अपनाकर अपनी सारी जिन्दगी बिता दी| वो कम्युनिस्ट पार्टी के कार्ड को, जो हमेशा उनकी जेब में रहता था, उसे वो अपनी सबसे बड़ी पूंजी कहते थे| एक शायर के लिए, जो जिन्दगी वो जी रहा है उसमें इंसाफ और नाइंसाफ़ को देखे और उसे प्रकट करे तो काफ़ी होता है| लेकिन कैफ़ी ने उससे ज्यादा किया| उन्होंने अपनी कला के माध्यम से समाज के परिवर्तन में बड़ा योगदान दिया| वो लोगों के बीच में सामाजिक न्याय की बातें करतें, औरतों के सशक्तिकरण की बातें करते| वो प्रेम भरे गीत लिखते, क्रांतिकारी गीत लिखते, सरहद पर तैनात जवानों में जोश भरने वाले गीत लिखते थे| कैफ़ी ने जो लिखा वही किया, उसे ही जिया| कैफ़ी आज़मी के इस योगदान को उनके पैतृक गाँव मिजवाँ में देखा जा सकता है| महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने कहा है– **"सिद्धांत और प्रयोग की एकता का मतलब है कि आपकी कथनी जैसी है यदि करनी वैसी नहीं तो वह कौड़ी की तीन है. . . ."[20]** सिद्धांत और प्रयोग की एकता का साकार रूप हम कैफ़ी आज़मी में देखते हैं| कैफ़ी आज़मी ऐसे शायर नहीं थे जो सिर्फ अपनी शायरी में ही लोगों को हिदायत देते रहें| समाज में जो सुधार वो देखना चाहते थे, मौका मिलते ही खुद उन्होंने समाज में करके दिखाया| जिन्दगी के आखिरी बीस वर्ष उन्होंने अपने गाँव 'मिजवाँ' को दिया, यहाँ आकर वो काम करने लगे| हर मोड़ पर लोगों ने उनके खिलाफ़ कुछ–न–कुछ अड़चनें डालने की कोशिश की पर उसका उनपर कोई असर नहीं होता था| कैफ़ी का परिवार बम्बई में था| कितने ही कठिन दौर से वे गुजरे लेकिन कभी भी इसकी सूचना वे अपने परिवार को नहीं देते थे| शबाना आज़मी बताती हैं कि उन्होंने एक बार उनसे पूछा कि अब्बा आप जब तब्दीली के लिए काम करते हैं तो तब्दीली उस रफ्तार से नहीं आती तो क्या आप मायूस नहीं होते? उन्होंने जो बात कही वो शबाना की जिन्दगी का मंत्र बन गया, उन्होंने कहा था– **"आप जब तब्दीली के लिए काम कर रहे हों तो इस उम्मीद में ये गुंजाइश भी छोड़ दो कि शायद वो तब्दीली आपके जिन्दगी में न आए लेकिन ये यकीन रखना चाहिए कि यदि आप पूरी संजीदगी से पूरी सिन्सियरिटी से काम करते रहेंगे तो वो तब्दीली आएगी चाहे आपके जाने के बाद ही क्यों न आए|"** सच में यदि कोई मिजवाँ में हो रहे गतिविधियों को देखे तो उसे कैफ़ी आज़मी को सलाम करना ही पड़ेगा| मिजवाँ वेलफेयर सोसायटी के जरिए लड़कियों के लिए हायर सेकेंडरी स्कूल, इंटर कॉलेज, कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेंटर और एम्ब्रायडरी व सिलाई सेंटर स्थापित कर समाज सेवा की ज़िंदा मिसाल पेश की है| मिजवा को कैफ़ी ने अकेले एक आदर्श में तब्दील कर दिया| मिजवाँ वेलफेयर सोसायटी का काम आजकल शबाना आज़मी देखती हैं|

कैफ़ी आज़मी सही मायनों में सच्चे मनुष्य थे, मानवतावादी थे, जन नायक थे| जनता के लिए वह सिर्फ़ शब्दों से आस्था नहीं गढ़ते रहे, उनके संघर्षों में लगातार साथ रहकर जूझते भी रहे| सफलता–असफलता की उन्हें कोई परवाह नहीं थी| उनका दृढ़ मत था कि देर–सबेर हर संघर्ष फलित जरूर होगा| कैफ़ी आज़मी के लिए मानव और मानवीय मूल्य हमेशा सर्वोपरि रहे और यही कारण है कि अपने कई समकालीनों की तरह बर्तमान ने उन्हें निराश नहीं किया| यही कारण है कि इस समाज में हमेशा आखिरी कतार में खड़ा होने वाला आम आदमी उनकी रचनाओं में हमेशा आगे रहा| कैफ़ी आज़मी केवल क्रांतिकारी कवि भर नहीं है| इनकी रचनाएं प्यार और उत्साह की सर्जना भी करती हैं, जो इंसानियत के जज़्बे को जिन्दा रखने की पहली शर्त है|

संदर्भ सूची:

(१) आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण–जनवरी २००२, पृ॰सं॰–२६
(२) वही
(३) वही,पृ॰सं॰–१८
(४) वही
(५) वही,पृ॰सं॰–२१
(६) वही,पृ॰सं॰–२२
(७) वही,पृ॰सं॰–२३
(८) वही,पृ॰सं॰–६४

[19]आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–१२२
[20]नीलकांत, राहुल : शब्द और कर्म, यश पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण-२०१२, पृ॰सं॰–७१

(९) www-bbc-com.cdn.ampproject.org
(१०) वही
(११) वही
(१२) वही
(१३) आज़मी शबाना,कैफ़ी आज़मी,चुनी हुई नज़्में, गज़लें,शेर और जीवन–परिचय,प्रथम संस्करण–जनवरी २००२, पृ॰सं॰–०६
(१४) www-bbc-com.cdn.ampproject.org
(१५) वही
(१६) आज़मी शबाना,कैफ़ी आज़मी,चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण– जनवरी २००२, पृ॰सं॰–०६
(१७) आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी,चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण–जनवरी २००२, पृ॰सं॰–०९
(१८) hindi-webdunia-com.cdn.ampproject.org
(१९) आज़मी शबाना, कैफ़ी आज़मी, चुनी हुई नज़्में, गज़लें, शेर और जीवन–परिचय, प्रथम संस्करण–जनवरी २००२, पृ॰सं॰–१२२
(२०) नीलकांत, राहुल : शब्द और कर्म, यश पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण-२०१२, पृ॰सं॰–७१